एकता परिषद राहत अभियान

27 – 30 अप्रेल, 2020 | संस्करण क्रमांक – 8 | मजदूर दिवस विशेषांक

मध्यप्रदेश

एकता परिषद जन पैरवी की सफलता.....

जयसिंह भाई श्योपुर

पलायन से वापस लौटे मजदूरों की चंबल नदी पर एकता परिषद ने की अगवानी, जिला प्रशासन का सहयोग रहा सराहनीय

ग्वालियर चंबल अंचल से फसल कटाई के मौसम में सबसे अधिक पलायन इस अंचल के शिवपुरी एवं श्योपुर जिले से होता है लेकिन श्योपुर जिले के आदिवासी सबसे अधिक दूरी तय करके फसल कटाई के लिए पाकिस्तान के बोर्डर से लगे जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में जीरे की फसल की कटाई के लिए जाते है। इस वर्ष भी जिले से राजस्थान के अंतर्राष्ट्रीय सीमा से लगे जिलों में केवल श्योपुर जिले के आधा सैकड़ा गांव से 7000 से अधिक मजदूर फसल कटाई के लिए गए थे। 24 मार्च को लॉक डाउन की घोषणा होते ही इन सभी मजदूरों के वापस आने के रास्ते बंद हो चुके थे और जहां कटाई का काम करने गए थे वहां काम भी समाप्त हो चुका था । यह पूरा इलाका रेगिस्तान से लगा हुआ है जहां पीने का पानी भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है ऐसी परिस्थिति में बिना काम के लंबे समय तक रुकना मजदूरों के लिए बहुत कठिन काम था इस कठिन परिस्थिति में प्रवासी मजदूरों ने एकता परिषद के साथ संपर्क करना शुरू किया तब पता लगा कि श्योपुर जिले के मजदूर बड़ी संख्या में जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में फंसे हुए हैं यद्यपि 10 प्रतिशत मजदूर किसी भी प्रकार से ट्रैक्टर ट्रक तथा पैदल चलकर श्योपुर पहुंच गए थे जब उनसे संपर्क किया गया तब उन्होंने श्योपुर पहुंचने तक की सारी कहानियों को साझा किया कि किस प्रकार 1 सप्ताह की यात्रा करके एवं अधिक पैसा खर्च करके श्योपुर पहंचे

जैसलमेर, अजमेर, फालोदी, जोधपुर व पाली में फसे मजदूरों को निकालती बसें

लेकिन अधिकांश पलायन पर गए मजदूर पूरे परिवार के साथ गए थे उनके साथ छोटे-छोटे बच्चे थे इसलिए उनके लिए पैदल चलकर वापस आना कठिन था काम समाप्त होने के बाद खाने की व्यवस्था भी मजदूर अपने पैसे से खरीद कर कर रहे थे लॉक डाउन होने के बाद राजस्थान में खाद्ध सामग्री के दाम भी बढ़ गए थे। जहां खेतों में लोग अपना डेरा जमाए थे वहां से बाजार भी थोड़ा दूर था लेकिन बाजार बंद होने से राशन भी दूने दामों पर मिल रहा था इस परिस्थिति में एक-एक दिन इन मजदूरों के लिए भारी पड़ रहा था।

लॉक डाउन के 21 दिन किसी भी तरह इन लोगों ने निकाले लेकिन लॉक डाउन के दूसरे चरण के प्रारंभ होते ही लोगों का धैर्य टूटने लगा उधर मौसम भी करवटे लेने लगा। बढ़ते हुए तापक्रम, घटते हुए पानी की व्यवस्था तथा समाप्त होती जा रही राशन तथा पैसों की व्यवस्थाओं ने लोगों की चिंताओं को और बढ़ा दिया। यही कठिन समय था जब पलायन में फंसे श्योपुर के लोगों ने एकता परिषद के श्री जय सिंह भाई से फोन पर संपर्क किया उसके बाद जय सिंह भाई पूरी तरह से सक्रिय होकर हर प्रकार से फंसे हुए लोगों की मदद करने के लिए जुट गए।

- **फोन के माध्यम से संपर्क** – स्थानीय जनप्रतिनिधियों और लोगों से फोन के माध्यम से संपर्क कर राशन की व्यवस्था मोहनगढ़ तहसील के अधिकारियों से संपर्क कर इन मजदूरों को राशन उपलब्ध करवाया तथा स्थानीय ग्राम पंचायत के प्रमुख से संपर्क करके 5 कुंटल राशन की व्यवस्था कराई जिससे इन लोगों के दो-तीन दिन की भोजन की व्यवस्था हो सकी।
- **स्वंय सेवी संस्थाओं से संपर्क –** जैसलमेर जिले के तमाम स्वयंसेवी संगठनों से संपर्क किया गया जिसमें गायत्री परिवार, उन्नति विकास संस्थान फलोदी , चाइल्ड लाइन जैसलमेर, राष्ट्रीय युवा योजना के श्री उम्मीद सिंह, SURE संस्था की लता बहिन सहित बकीलों, तथा कई समाजसेवियों से फोन पर संपर्क कर फंसे हुए मजदूरों के भोजन की व्यवस्था कराई गई।
- **सरकार के साथ संपर्क** – राजस्थान प्रशासन, राजस्थान सरकार के विभिन्न स्तर के अधिकारियों से संपर्क किया तथा उनका बहुत अच्छा सहयोग रहा इसी लिए 4 दिन के बाद फलोदी तथा आसपास फसे 5 हजार से अधिक मजदूरों के भोजन की व्यवस्था सरकार द्वारा कराई गई ।

- **पलायन की जानकारी जुटाना –** पलायन में फंसे लोगों की जानकारी कहां कितने लोग फंसे हैं इसकी सही जानकारी किसी के पास नहीं थी इसलिये एकता परिषद टीम को पलायन पर गए युवकों की जानकारी एकत्रित करने के लिए लगाया, उनके माध्यम से श्योपुर जिले के संगठन से जुड़े 22 गांव के 930 लोगों की सूची तथा 59 मुखियाओं के मोबाइल नंबर मिल गए जिसके आधार पर सरकार के साथ जन वकालत कर कार्यवाही शुरू की गई ।

- **श्योपुर के मजदूरों की वापिसी के लिए जन वकालत –**

श्योपुर जिले के 22 गांव के 930 लोगों की सूची जिला प्रशाशन , स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवम् मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री जी को भेजकर निवेदन किया कि जिले के हजारो मजदूरों के साथ बड़ी संख्या में बच्चे भी राजस्थान में फंसे है । उनको तुरंत वापिस लाने की व्यवस्था की जाये।

राजस्थान में फंसे श्योपुर के मजदूरों को लेकर बसें रवाना

बसों के इंतजार में बैठे राजस्थान में फंसे मजदूर।

जैसलमेर, अजमेर, फालौदी, जोधपुर व पाली में फंसे लोगों को लेकर राजस्थान से बसें रवाना

भास्कर संवाददाता | श्योपुर

राजस्थान के अलग-अलग शहरों में मजदूरी करने गए मजदूर लॉक डाउन में वहीं फंसकर रह गए। ऐसे में यह लोग खाने-पीने के लिए परेशान तो रहे ही, साथ ही खुले आसमान के बीच इन्हें रहने को मजबूर होना पड़ा और मजदूरी भी नहीं कर पाए। अब इन्हें राजस्थान से वापस श्योपुर के लिए भेजा जा रहा है, बुधवार को राजस्थान से इनके लिए बसें रवाना की गई।

राजस्थान के जैसलमेर, अजमेर, फालौदी, जोधपुर व पाली में फंसे मजदूरों की सूचना प्रशासन को महात्मा गांधी सेवा आश्रम के जरिए दी गई। इस पर प्रशासन ने शासन को सूची भेजी, जिस पर राजस्थान सरकार से चर्चा की गई। इसके बाद राजस्थान सरकार ने एक जगह सभी मजदूरो को एकत्रित किया और बसों के माध्यम से करीब 400 से ज्यादा मजदूरों को बसों से श्योपुर के लिए रवाना किया। इधर राजस्थान सहित अन्य इलाकों के लिए श्योपुर में फंसे राजस्थान के लोग भी भेजे गए। वहीं राजस्थान में फंसे श्योपुर के एक सैकड़ा लोग श्योपुर पहुंचे, जिन्हें जांच के बाद होम क्वारेंटाइन किया गया है।

- **श्योपुर जिला प्रशाशन का सहयोग –**

श्योपुर जिला प्रशाशन का इन मजदूरों को वापिस लाने तथा राजस्थान सरकार से उनकी भोजन तथा अन्य व्यवस्थाएं करवाने में बहुत ही सकारात्मक सहयोग रहा तथा जिला कलेक्टर हर समय मोबाइल पर उपलब्ध रही तभी इन मजदूरों को वापिस लाने में सफलता मिली ।

- **मजदूरों की वापिसी –**

श्योपुर जिला प्रशाशन ने मजदूरों के वापिसी की बहुत अच्छी तैयारी की वहीं, राजस्थान सरकार के साथ मिलकर वहां की बसों से मध्यप्रदेश की सीमा तक मजदूरों को लाया गया, वहां उनकी अगवानी के लिए पूरा प्रशाशन मौजूद था वहीं सभी के खाने की व्यवस्था भी सरकार की और से की गई । सभी मेडिकल टीम द्वारा जांच कर बसों से उनके गांव में भेजा गया ।

- **एकता परिषद द्वारा चंबल पर मजदूरों की अगवानी –** एकता परिषद के जय सिंह भाई एवं कैलाश पाराशर जी ने राजस्थान की सीमा पर जाकर मजदूरों की अगवानी कर सभी को उनके गृह गांव में भेजने की व्यवस्था में सहयोग किया ।

श्योपुर जिले से प्रारंभ की गई जनवकालत का यह नतीजा हुआ कि जो भी बसे श्योपुर आ रही थी उन्हीं बसों में मध्य प्रदेश के कई जिलों के मजदूर श्योपुर पहुंचे जहां से जिला प्रशासन ने अलग से व्यवस्था कर उनके गृह जिले तक पहुंचाने की व्यवस्था की । इस जनबकालत के फलस्वरूप श्योपुर शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, शहडोल, टीकमगढ़, सतना, डिंडोरी, उमरिया, सागर, आदि जिलों के भी १५०० मजदूर श्योपुर पहुंच कर अपने जिलों को रवाना हुए ।

एकता परिषद ने पिछले १५ दिनों से जैसलमेर से मजदूरों की वापिसी की जो मुहिम चलाई थी वह मजदूरों के घर वापिस के साथ पूरी हुई अब भविष्य की चिंता है कि आगे आने वाले ५ महीने कैसे कटेंगे लेकिन एकता की ताकत से मिलजुल कर इन कठिन दिनों को भी काट लेंगे । सभी सहयोगियों, शुभ चिंतकों तथा राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की सरकारों को बहुत धन्यवाद जिनके सक्रिय सहयोग से कठिन चुनौती को पूरी कर सके ।

लम्बे सफर की थकावट भी छुप गई घर पहुचने की खुशी में.....

जयसिंह भाई श्योपुर

हमे देख चेहरों पर आई खुशी मिलने को दौड़ पड़े सभी.....

जिला–श्योपुर

१७ घण्टे की यात्रा कर श्योपुर सीमा पर पहुंचे जैसलमेर, अजमेर व फलौदी जोधपुर, पाली में फंसे मजदूर।

ज्ञात रहे कि पिछले दिनों हजारों की संख्या में जैसलमेर और राजस्थान के कई जिलों में श्योपुर और मध्य प्रदेश के चारों तरफ के सैकड़ों मजदूर फसे हुए थे जिसकी एडबोकेसी एकता परिषद के जयसिंह जादोन द्वारा की गई और उसी श्रृंखला में 2 दिन से उन मजदूरों की वापसी हो रही है क्योंकि सबसे ज्यादा श्योपुर की तरफ से उसकी बापसी व भोजन की एडवोकेसी की गई थी इसीलिए

मजदूर अधिकतर श्योपुर बोर्डर से भेजे जा रहे हैं।

मप्र सीमा तक राजस्थान परिवहन निगम की बसें छोड़ रही है

सीमा पर जांच एवं भोजन कराकर उन्हें मध्य प्रदेश श्योपुर की बसें उनको आगे उनके गांव जिले तक भेजने की व्यवस्था श्योपुर जिला प्रशासन द्बारा की जा रही है। श्योपुर के मायापुर गांव की कांति बाई और उसकी टीम पहुंच गई है हमने बोर्डर पर उनका स्वागत किया और मिले तो देख कर बहुत खुशी हुई और पूरे संगठन का बहुत धन्यवाद दे रही थी मेरे साथ महात्मा गांधी सेवा के कैलाश पराशर जी सरकार की तरफ से भोजन व्यवस्था के प्रभारी श्री ओ पी पाण्डेय महिला बाल विकास श्योपुर राजस्व विभाग की तरफ से मोनिटर तहसीलदार रजनी बघेल जी कर रही है और जनपद पंचायत बवश्री प्रजापति जी तथा स्वास्थ्य विभाग की टीम लगातार व्यवस्था में लगी हुई है आज फिर जैसलमेर से सैकड़ों की संख्या में लोग निकलेंगे उसमे श्योपुर की संख्या अधिक होगी ऐसी उम्मीद है।

पिछोर शिवपुरी और कोलारस क्षैत्र के 270 मजदूर बुलाये गये वापिस.....

प्रशासन और संगठन के संयुक्त प्रयास से मजदूरों की घर वापसी.....

शिवपुरी से रामप्रकाश शर्मा जी की रिपोर्ट

जिला शिवपुरी – एकता परिषद, शिवपुरी के साथी द्वारा पलायन पर गये मजदूरों की समस्या से संबंधित जानकारी लगातार स्थानीय प्रशासन को दिया जाता रहा। एकता परिषद ने 18 अप्रेल को शिवपुरी कलेक्टर अनुग्रहा पी. के माध्यम से मध्यप्रदेश के मख्यमंत्री शिवराज सिंह को पत्र लिखकर विभिन्न राज्यों व 'शहरों में फसे आदिवासी मजदूरों को वापिस बुलवाने के लिये पत्र लिखा था। इतना ही नहीं संगठन के द्वारा प्रदेष भर में प्रशासन और जनप्रतिनिधियों को लिखे गये पत्र और मीडिया के माध्यम से दबाव बनाया जाता रहा कि पलायन पर गये मजदूरों को वापस अपने प्रदेश, जिले और गांव तक लाने की व्यवस्था की जाये।

अन्ततः प्रदेश की सरकार ने माना और पलायन पर गये मजदूरों को लाने की प्रक्रिया 'शुरु की गई।

इसी क्रम में 27 अप्रेल 2020 को रात 9 बजे 5 बसों से शिवपुरी जिले के लगभग 20 गांवों के 270 लोगों (महिला व बच्चों सहित) को, जो मध्यप्रदेष के ही भिंड जिले में मजदूरी के लिये गये थे, षिवपुरी शहर से 3 किलोमीटर दूर मोहिनी सागर छात्रावास पर लाया गया। उनके शिवपुरी पहुॅचने से पूर्व जिले के अतिरिक्त जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, महिला और पुरुष पुलिस, तहसीलदार, सी.ई.ओ. और चिकित्सा विभाग की पूरी टीम उपस्थित थी। षिवपुरी पहुॅचते ही संगठन के गांव के आदिवासियों ने श्री रामप्रकाष शर्मा, कार्यकर्ता, एकता परिषद को फोन किया। रामप्रकाष जी की उपस्थिति में प्रषासन की तरफ से सभी 270 लोगों की जांच की गई, सबको भोजन कराया गया, जिनके पास मास्क नहीं था उन्हें मास्क दिया गया और बस से अपने-अपने गांव पहुॅचाया गया। सी.ई.ओ., जिलापंचायत के नेतृत्व में यह पुरा काम किया

> शिवपुरी जिले के मदनपुर गांव के 20 मजदूरों की दास्तां पिछले अपडेट में दिया गया था। ये मजदूर पलायन करके महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में गये थे और ठेकेदार के द्वारा राषन और मजदूरी का भूगतान दोनों ही नहीं दिया गया। इस समस्या को लेकर संगठन की ओर से शिवपुरी कलेक्टर को एक पत्र भी दिया गया था। संगठन के इस एक पत्र पर कलेक्टर, शिवपुरी ने जो सक्रियें भुमिका निभाई और तत्काल 1000-1000 रुपये प्रति व्यक्ति की राहत दिलवाई, उसकी तारीफ करनी होगी।

गया। इस पूरी प्रक्रिया में संगठन के दबाव का असर स्पष्ट देखा जा सकता है।

लॉक डाउन में फंस गए थे भिंड व अन्य स्थानों पर, बड़ी संख्या में सहरिया आदिवासी परिवार इनमें शामिल

दीगर स्थानों से लौटे 250 मजदूर, सभी की हुई स्क्रीनिंग

शिवपुरी, ईएमएस

कोरोना वायरस संक्रमण की रोकथाम के लिए लगाए गए लॉक डाउन में फंसे 250 से ज्यादा मजदूर मंगलवार को शिवपुरी जिला मुख्यालय पर लौटकर आए। जिला प्रशासन की समन्वय टीम के माध्यम से इन सभी 250 से ज्यादा ग्रामीणों को भिंड जिले से इन्हें बसों के माध्यम से जिला मुख्यालय पर पॉलिटेक्निक कॉलेज के पास बनाए गए आश्रय स्थल पर लाया गया।

इन ग्रामीणों में अधिकांश सहरिया आदिवासी हैं जो भिंड जिले में मजदूरी के लिए गए थे। भिंड में यह सरसों व गेहूं कटाई के लिए मजदूरी के लिए गए थे लेकिन अचानक लॉक डाउन लग जाने के बाद यह वहीं पर फंस गए और आने-जाने के साधन न होने से इनकी घर वापसी नहीं हो पा रही थी। अब मंगलवार को इन्हें जिला मुख्यालय पर लाया गया इसके बाद इन्हें अपने घरों के लिए बसों से रवाना किया गया।

शिवपुरी आने पर इन सभी ग्रामीणों की स्वास्थ्य विभाग के दल ने स्क्रीनिंग की। स्वास्थ्य विभाग ने सभी लोगों के नाम, पते व इनके बारे में पूरा ब्यौरा दर्ज किया। भिंड से आए इन ग्रामीणों ने बताया कि वह वहां पर एक महीने तक फंसे रहे। वहां पर प्रशासन व अन्य समाजसेवियों के द्वारा दिए गए खाने की सामग्री व पैकेट से इनका गुजारा चला। जो 250 लोग लौटे उनमें पिछोर क्षेत्र के नोंगवा, खोड़, बयावली, कुलई, हीरापुर, खेरोना, मानपुर, शिवपुरी विकासखंड के वीरपुर, बड़ागांव के ग्रामीण वहीं कोलारस विधानसभा क्षेत्र के गोरा, किशनपुर, ईमलिया, सिंघई, केकुआ, ककरौरा, सोहनपुर के ग्रामीण शामिल है।

एकता परिषद ने की इनके रोजगार की मांग

जब वह आदिवासी परिवार शिवपुरी लौटे उस वक्त एकता परिषद के जिला संयोजक रामप्रकाश शर्मा भी आश्रय स्थल पर मौजूद रहे। इस दौरान इन्होंने पत्रकारों से चर्चा में कहा कि जो मजदूर बाहर से लौटकर आ रहे हैं इनके रोजगार की व्यवस्था स्थानीय स्तर पर जिला प्रशासन करे। साथ ही इन्हें मजदूर सुरक्षा की एक हजार रुपए की राशि, तीन महीने का राशन व अन्य व्यवस्थाएं जो सरकार ने घोषणा की है वह इन्हें दिलवाई जाएं।

एकता परिषद ने की इनके रोजगार की मांग–

जब एकता परिषद के साथी यह जानने का प्रयास किये कि इस वर्ष पलायन से लोगों को क्या आर्थिक लाभ हुआ तो हरिपुर के भगवान सिंह, गोरा गांव के कप्तान, खेडका के हरवन, डेहरवारा के फूलसिंह, जगतपुर के अरुण आदि ने बताया कि– ‘‘प्रत्येक वर्ष पलायन से लौटते समय लगभग 8–10 क्विंटल गेहुँ ले आते थे परन्तु इस बार 5–7 परिवारों के पास 25 किलो के आस–पास गेहुँ है। किसी–किसी के पास 1000 रुपये बचे थे वो भी खत्म हो गये।’’ इस प्रकार मजदूर वर्ग चौतरफा संकट से घिरा है। संगठन की मांग है कि ऐसे मजदूरों को अपने ही गांव अथवा जिले में काम दिया जाये

घर वापसी से प्रसन्न हैं मजदूर.....................

गुना से सूरज सिंह की रिपोर्ट

जिला गुना – गुना के मोहाल कालोनी गांव से पलायन पर गये 51 मजदूरों से संबंधित जानकारी भी पिछले अपडेट में दिया गया था। आप सभी जानते हैं कि पिछले लगभग एक महिने से पलायन पर गये मजदूरों के संबंध में संगठन जानकारी इकट्ठा करने का प्रयास कर रहा है। विभिन्न साथियों की मदद से अबतक हजारों मजदूरों की जानकारी इक्टठा किया जा चुका है।

प्रदेष सरकार द्वारा गुना के साथ–साथ मध्यप्रदेष के अन्य ज के भी पलायन पर गये मजदूरों को वापस लाने का काम प्रारंभ कर दिया गया है। इसी क्रम में 28 अप्रेल 2020 को लगभग 2000 मजदूरों को राजस्थान के जसलमेर से वापस मध्यप्रदेष लाया गया। मैदानी कर्मचारियों के द्वारा इन मजदूरों का स्क्रीनिंग कर उन्हें अपने–अपने गांव पहुँचाया गया। इस प्रक्रिया में गुना के मोहाल कालोनी के भी सभी 51 मजदूर वापस अपने घर पहुँचे। इन मजदूरों ने संगठन को धन्यवाद दिया है।

मजदूरों की घर वापसी के साथ ही जिला समन्वयक श्री सूरज सहरिया ने इनके लिये 3 महिने के अग्रीम राषन और 1000 रुपये प्रति व्यक्ति की योजना के संबंध में स्थानीय लेबर ऑफिसर श्री षर्मा जी से बात की। श्री षर्मा जी ने सूरज से कहा है कि सभी वापस आये मजदूरों का खाता नम्बर यथाषीध्र उपलब्ध करा दें तो राषी डाल दी जायेगी। इस प्रकार संगठन एक–एक मजदूर को वापस लाने और उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ दिलवाने के लिये तत्पर है। इस प्रयास का लाभ भी लोगों को मिल रहा है।

जौरा में क्वारेंटाइम 273 मजदूरों को 15 बसों से किया गया रवाना .....

एकता परिषद टीम ने प्रशाशन की मदद से कराया भोजन, किया विदा

मुरैना से उदय भान सिंह की रिपोर्ट

जिला मुरैना – मुरैना जिले की विभिन्न पंचायतों के ग्रामीण क्षैत्रों में मध्य प्रदेश के कई जिलों के श्रमिक कटाई का कार्य कर रहे थे। लोकडाडन के बाद यह वही जहां काम कर रहे थे फसे रह गये । इन सभी को जनपद जौरा में क्वोंरनटाइन किया गया था । इनमें इन्दौर, शिवपुरी,श्योपुर, ग्वालियर डबरा, पन्ना, टीकमगढ, छतरपुर और अशोक नगर के कुल 552 मजदूर थे जिनमें से 273 मजदूरों को बुधवार को 15 बसेां से रवाना किया । इस अवसर पर एकता परिषद जिला मुरैना के जिला समन्वयक उदयभान सिंह, महातमा गांधी सेवा आश्रम जौरा के प्रवंधक प्रफूल्ल श्रीवास्तव उपस्थित रहे। एकता परिशद टीम के सदस्यों ने श्रमिको को जाने से पूर्व भोजन कराया और विदा किया।

पहुचने का स्थान	मजदूरों की संख्या	आवश्यक बसों की संख्या
शिवपुरी	162	10
अशोकनगर	33	
डबरा ग्वालियर	4	
टीकमगढ	4	
छतरपुर	1	2
पन्ना	20	
विजयपुर	23	
श्योपुर	26	3
कुल	273	15

जिला ग्वालियर –

ग्वालियर जिले के डबरा के श्रमिक जब एक महीने बाद अपने गांव सांभर सिंगर वापस पहुंचे तो उनके चहरों पर खुशी ओर अपनों के बीच पहुॅचने और सभी से मिलने की लालिसा दिखी। अभी उन्हें सरकारी स्कूल में ठहराया गया है जांच होने के बाद उन्हें घर वापस भेजा जाएगा एकता परिषद के

कार्यकर्ता साथियों की पहल से यह काम संभव हो सका।

ग्वालियर जिले के गॉव में जो मजदूर परिवार वापिस आये उन सभी के लिये एकता परिशद कार्यकर्ताओं ने मास्क वितरित कर संक्रमण से बचने के लियेशोशल डिस्टेसिंग की जानकारी देने का कार्य कर रहे हैं। कार्यकर्ताओं ने 600 मास्क का वितरण किया है।

मरा गॉव पहॅच कर वंचितों के लिये मास्क और खाद्ध सामग्री पहुॅचा कर की मदद।

कुलदीप तिवारी मुरैना

जिला मुरैना – मरा गांव, मुरैना जिले के पहाड़ गड आदिवासी विकासखंड का सहरिया आदिवासी बाहुल्य गांव है जिला मुख्यालय से करीब 90 किलोमीटर दूर जंगल मे बसे इस गांव मैं करीब 120 अदिबासी परिवार निवास करते है। एकता परिषद का इस गांव के साथ संबंध बहुत पुराना है एकता परिषद के संस्थापक आदरणीय राजा जी भी कई बार इस गांव में जाकर उनकी समस्याओं से स्वम् रूबरू हो चुके है इसलिये जब भी कोई समस्या होती है तो सबसे पहले इस गांव का ध्यान आता है।

वेसे तो संगठन के प्रयास से बहुत सारी समस्याओं का हल पिछले सालों में हुआ है एव कुछ परिवारों को जमीन के पट्टे भी प्राप्त हुए हैं परन्तु सहर से काफी दूरी होने और सूखा क्षेत्र होने के कारण अभी भी कृषि की उपलब्धता ना के बराबर है इसलिए प्रति वर्ष गावों के अधिकतर परिवारो को मजदुरी करने के लिए अन्य जगहों पर जाना पड़ता हैं इस वर्ष भी कई परिवार पलायन करके अन्य जिलों मैं गए थे परन्तु अचानक आए कोरोना संकट की बजह से पहले जैसी मजदुरी नही मिली और कुछ लोग जहां गए थे बही फस गए इस कारण गांव में रह रहे परिबारो के सामने खाने का सकंट पैदा हो गया जब इस बात का पता संगठन और गांधी आश्रम के कार्यकर्ताओं को पता चला तव भोपाल के कुछ युबा साथियों जो कि 2018 में मरा गांव में युबा शिविर आयोजित कर चुके थे , से सम्पर्क कर गांव में तत्काल कुछ राहत देने की बात की तदुपरांत भोपाल के साथियो ने भोपाल में स्थानीय स्तर पर करीब 40,000

रुपये की राशि एकत्रित कर गांधी आश्रम को दी जिससे गांधी आश्रम ने 95 परिवार चिन्हित किए जिन्हें तुरन्त राहत की आवश्कता थी उनके लिए 10 किलो आटा , 2 किलो दाल , 1 लीटर सरसो का तेल , 1 किलो नमक, साबुन , एव 100 ग्राम मिर्ची , 100 ग्राम हल्दी , 100 ग्राम धनिया पाउडर एक किट के रुप मे प्रत्येक परिवार को स्वम् गांव में जाकर वितरित किए।

इस कार्य मे एकता परिषद के मुरैना जिला समन्वयक उदयभान सिंह एव गांधी आश्रम के प्रफुल्ल श्रीवास्तव उपस्थित रहे ।एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रन सिंह परमार ने इस कार्य के लिए भोपाल के युवा साथियो का आभार प्रकट करते हुए कहा कि अगर इसी तरह सहर में रहने बाले पड़े लिखे युबा गरीबो ओर वंचितों की मदद करने आगे

आएंगे तो गरीबो के हित मे कार्य कर रहे अन्य साथियों का मनोबल भी बढ़ेगा तथा समाज मे असमानता की खाई को दूर किया जा सकेगा।

घर जाकर जाकर की दिव्यांग की मदद.....

दीपक अग्रवाल खुरई

जिला सागर – सागर जिला के एकता परिशद समन्यवक दीपक भाई को मडिया कीरत के मुखिया गोरेलाल आदिवासी से जानकारी मिली कि गांव में दो तीन परिवार ऐसे हैं जो खाने को तरस रहे हैं, उनके परिवार के मुखिया भी नहीं हैं और भूमिहीन हैं , प्रशाशन से किसी भी प्रकार की मदद नही मिल सकी है, उन्हे तुरंत राहत की जरुरत है। दीपक विना समय गवाये खुरई से 45 किलोमीटर दूर मड़िया कीरत लहॅच गये और देखा नीमा बाई आदिवासी जिसकी उम्र 60 वर्ष से ऊपर है और तीन नाती के साथ रहती हैं सबसे बड़े नाती की उम्र 14 वर्ष है वह मेहनत मजदूरी भी नहीं कर सकता , माता से पूछने पर बताया की हमारी बहू की मृत्यु हो चुकी है एक बेटा है जो दोनों पैरों से विकलांग वा मानसिक रूप से विक्षिप्त है वह भी जेल में हैं इनकी परेशानी देखते हुए मडिया कीरत से चल कर पिठोरिया में किराना दुकान से सामान सूखा राशन जिसमें आटा 10किलो तेल 1किलो नमक 1पै. धनिया 1 मिर्ची साबुन बिस्कुट 4पै. शक्कर चाय पत्ती खरीद कर वापस मडिया पहुंचा और महिलाओं को ₹50 नगद देकर वह सब्जी भाजी खरीद सकें इस प्रकार 3 महिलाओं को सहायता उपलब्ध कराई महिला का घर भी खस्ता हाल जो कभी गिर सकता है।

उज्जवला योजना के खाते में आये 772 रुपये लेकिन उन्हे नही पता गैस कनेक्शन का नम्बर।

दीपक अग्रवाल खुरई

जिला सागर – कोविड 19 को लेकर सरकार ने गरीब महिलाओं के खाते में 772 की राशि डाली है लेकिन पिछले वर्षो में उज्जवला गैस योजना के तहत गैस चूल्हा और टंकी दी गई थी परंतु ना ही महिलाओं को गैस कनेक्शन का नंबर पता था ना ही पासबुक दी गई इस कारण से महिलाएं अपने गैस टंकी को लेने में बहुत दिक्कत पैदा हो रही थी।

जब महिलाओं ने एकता परिषद के कार्यकर्ताओं को अपनी समस्या बताई तो जुझार पुरा पिठोरिया ग्राम की महिलाओं को लेकर गैस एजेंसी बांदरी पहुंचे और गैस एजेंसी के वितरक से कार्यकर्ताओं ने बात की और महिलाओं की समस्या सुनाई उसके उपरांत नाम से और बैंक खाता नंबर से

उनकी सूची निकाली उसके उपरांत 2 घंटे में उनकी गैस पासबुक बनाई और कहा यह मोबाइल से गैस नंबर लगा देना आपकी बुकिंग हो जाएगी लेकिन गरीब आदिवासियों को वह भी लगाना दिक्कत पैदा कर रहा था उसके उपरांत एकता परिषद के कार्यकर्ता मनोज भाई के मोबाइल से कई महिलाओं के नंबर लगाए गए उसके बाद शाम 4 बजे महिलाओं को राशि जमा कर बड़ी हुई गैस टंकी प्राप्त हुई। वहीं कई महिलाओं के जनधन खाते में ₹500 आए हैं लेकिन बैंक खाते में आधार लिंक ना होने के कारण उन महिलाओं के पैसे की निकासी नहीं हो पा रही है एकता परिषद के कार्यकर्ताओं ने सभी महिलाओं को समझाइश देकर अपने अपने खाते में आधार लिंक कराने की समझाइश दी गई सभी महिलाओं को अपने घरों में साफ सफाई एवं एक दूसरे से दूरी बनाने बाहर जाने के बाद घर वापसी पर हाथ साबुन से धोना कुछ भी सामान आने पर उसको अच्छी तरह से धोना की बात कही गई है।

150 आदिवासी परिवारों को फ्री में चावल दिलाकर की मदद .....

दुर्गा पवार झाबुआ

जिला झाबुआ – रामा ब्लॉक के 3 गॉव के 150 आदिवासी परिवारों को फ्री चावल का वितरण दुर्गा वहिीन ने स्वय जाकर कराया । 5 ऐसे भी परिवारथे जिनके पास पात्रता पर्ची नही थी , प्रशाशन के साथ संवाद कर उन्हे भी 5-5 किलो चावल दिलाया गया। इसके अतिरिक्त गुजरात से वापिस होने वाले 66 मजदूर परिवारों को 15 दिन का राशन एकता परिशद के सहयोग से दिया जायेगा।

रामा ब्लॉक के 150 आदिवासियों को राशन दिलाती दुर्गा पवा

'जहां चाह, वहां राह' को सार्थक करती संगठन की कार्यकर्ता – राजकुमारी ...

अशोक नगर से राजकुमारी

जिला अशोकनगर –

अशोकनगर जिले में काम करने वाली राजकुमारी बहन लॉकडाउन के बाद से ही लगातार फोन सम्पर्क कर गांव में संवाद की प्रक्रिया को मजबूत बनाये हुये हैं। इस दौरान राजकुमारी लोगों को इस महामारी से बचने के लिये सरकार द्वारा दिये गये निर्देषों को पालन करने के लिये ग्रामीण भाई–बहनों को प्रेरित कर रही हैं वहीं पलायन पर गये लोगों की जानकारी भी इकट्ठा कर रही हैं। इस जानकारी के आधार पर संगठन के वरिष्ठ साथियों की मदद से 'शासन–प्रशासन तक पलायन पर गये लोगों की जानकारी देकर उन्हें राहत सामग्री दिलवाने और ऐसे मजदूरों को घर वापस लाने के लिये दबाव बना रही हैं। कुछ दिनों से राजकुमारी बहन गांव–गांव जाकर लोगों को मास्क बांट रही हैं जिसे वो खुद ही बना हैं। इस मास्क को बांटने के पीछे उनकी सोच लोगों को मुॅह और नाक को ढ़कने का महत्व बताना है। वह मास्क देते हुये वह यह भी बता रही हैं कि हाथ को साबुन से

धोते रहना, किसी भी कपड़े से मुंह और नाक को ढ़क कर रखना, भीड़ वाले इलाके में एक दूसरे से कम से कम एक मीटर की दूरी बना कर खड़े होना और ज्यादातर घर में ही रहना इस बीमारी का इलाज है। लॉकडाउन के बाद से ही राजकुमारी की दिनचर्या में अपने घर के कार्यो के अलावा सुबह मास्क बनाना और शाम को गांव–गांव जाकर मास्क बांटना और कोरोना के प्रति जागरुक करना शामिल रहा है। वे पलायन पर गये मजदूरों के लिये बहुत सक्रियता से काम करती रही हैं।

छत्तीसगढ़

निशाद भाई टिल्दा, रायपुर

ग्राम बिंझरा में मनरेगा के तहत फिजिकल डिस्टेंसिंग के साथ तालाब खुदाई का कार्य शुरू।

जिला कोरबा – जिला कोकोरबा विकासखंड पोड़ी उपरोड़ा के ग्राम पंचायत बिंझरा में मनरेगा के तहत लोगों को रोजगार देने के लिए तालाब खुदाई का काम शुरू किया गया है। कोरोना महामारी से लोग अपने घर में लोक डाउन में फंसे हुए थे रोजगार नही होने से रोजी रोटी की समस्या आन पड़ी थी। एकता परिशद टीम के सदस्यों ने मनरेगा के काम शिरु करने के लिये सरकार को पत्र दिया गया था। अब छत्तीसगढ़ शासन के नियमानुसार लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए मनरेगा के तहत कार्य कराने पंचायतों को निदेशित किये गए है ताकि लोक डाउन के दौरान भी लोगो को रोजगार मुहैया हो सके इसी के तहत ग्राम पंचायत बिंझरा की सरपंच श्रीमती चंद्रिका देवी पोर्ते की पहल पर ग्राम बिंझरा के मूल निवासी श्रीमती प्रेम बाई संत के निजी जमीन पर तालाब का कार्य शुरू हुआ जिसके तहत ग्राम बिंझरा के लोगों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हुए तालाब का काम विधिवत चालू कराया गया रोजगार सहायक रोहणी सिंह पुलस्त शनि राम कर्स उपसरपंच और जनपद सदस्य श्रीमती अनीता यादव और एकता परिषद के कार्यकर्ता मुरली दास संत उपस्थित रहे इस दरम्यान फिजिकल डिस्टेंस का पालन करते हुए एवं मास्क लगाकर लोगों ने पूजा अर्चना के पश्चात कार्य प्रारंभ किया।

प्रयोग समाज सेवी संस्था /एकता परिषद छत्तीसगढ़ द्वारा कोविड – 19 में चलाये गये राहत कार्यक्रम

- **जिला सरगुजा** – झारखण्ड राज्य के 5 मजदूर जो सरगुजा जिले में फॅसे हुये हैं, उन्हें संस्था और एकता परिषद द्वारा रू. 1560/– का सूखा राशनएवं हरी सब्जी देकर 7 दिन के भोजन की व्यवस्था की गई । जिले के बनकेसमा गांव (उदयपुर ब्लॉक) में गरीब परिवारों को संगठन के कार्यकर्ता अर्जुन दास जी के द्वारा स्थानीय सरपंच के सहयोग से 50 मास्क वितरित किया गया।
- **जिला रायपुर** – ग्राम खोरसी, जिला रायपुर में 5 गरीब परिवार जिनके पास भोजन की व्यवस्था नहीं थी। जिला समन्वयक मीना बहन द्वारा सरपंच से चर्चा कर पंचायत के सहयोग से प्रत्येक परिवार को 5 किलो चांवल, 2 किलो आलू, 1 किलो प्याज तथा 2 किलो राहर दाल देकर सहयोग किया गया । ग्राम मलौद, में मितानिन दीदी द्वारा साबुन से बार–बार हाथ धुलाई के तरीका, सामाजिक दूरी बनाकर रखने के फायदे बताये गये तथा दीवार लेखन कर जागरूक किया गया, ताकि यह निरन्तर आदत में बना रहे ।
- **जिला गरियाबंद** – गरियाबंद में 31 परिवारों को 25 किलो चावल, 2 किलो दाल, तेल और मसालों का वितरण कराया। जिले के रायआमा गांव में रोचक दीवार लेखन – युवा

समूह द्वारा किया गया । जिले के ग्राम फुलकर्रा ग्राम में 29 अप्रेल 2020 से मनरेगा के तहत् तालाब गहरीकरण का कार्य चल रहा है ।

- **जिला सूरजपुर** – सूरजपुर जिले के ग्राम सेन्दूरी में 26 अप्रेल 2020 को जिला पंचायत सदस्य श्री भूलन सिंह से सम्पर्क कर 31 गरीब परिवारों को एक सप्ताह का भोजन – चांवल, दाल, सब्जी, तेल, नमक का वितरण कराया गया । इस कार्य में संगठन के युवा सदस्य श्री रामकेश्वर सिंह व अन्य सदस्यों की महत्वपूर्ण योगदान रहा ।
- **जिला कोरिया** – ग्राम टिकुरीटोला, जिला कोरिया के राजेन्द्र चन्देल द्वारा मध्यप्रदेश पांवर प्लाट जैतहरी के 20 पलायन मजदूर जो शाम को भूखे पैदल जा रहे थे, उन्हें रात को भोजन तथा सुबह का भोजन कराकर सम्मानपूर्वक विदाई किया गया ।
- **जिला कोण्डागांव** – जिले के ग्राम पनसरा में मनरेगा का कार्य – तालाब गहरीकरण का कार्य प्रारंभ हो गया है ।
- **झारखण्ड राज्य** के अनेक जिलों के प्रवासी मजदूर जो छत्तीसगढ़ राज्य में फॅसे हुए हैं, उनके भोजन की व्यवस्था करने के लिए सम्पर्क किया गया, । इस काम को सभी जिलों में कार्यरत जिला समन्वयकों द्वारा किया जा रहा है ।
- **जिला कोरबा –** कोरबा जिले के देवपहरी गांव (पौड़ी उपरोड़ा ब्लॉक) में संगठन की कार्यकर्ता रुकमणी देवांगन के द्वारा स्थानीय सरपंच के सहयोग से 6 असहाय परिवारों को राषन वितरित किया गया।

असम

संगठन की मदद से.....

सुश्री नयनतारा असम

जिला धेमाजी – असम राज्य के धारीकसारी गांव (जिला–धेमाजी) के डा. कुतुम अपने गांव से काफी दूर तेलंगाना राज्य के संगारेड्डी जिले के एक फार्मा कम्पनी में काम करते थे। संगारेड्डी जिले के बोन्थापल्ली के पास स्थित ऑनर लैब में डा. कुतुम का काम पैकेजिंग विभाग में था। लॉकडाउन प्रारंभ होने तक तो सभी स्टाफ कम्पनी में काम करते रहे परन्तु लॉकडाउन के कारण कम्पनी तक आने–जाने के साधन के अभाव में कुतुम के साथ–साथ अन्य स्टाफ भी काम पर जा नहीं सके। सभी स्टाफ ने कम्पनी से यातायात की व्यवस्था करने के लिये निवेदन किया परन्तु कम्पनी के द्वारा ये सुविधा उपलब्ध नहीं कराया गया परिणामस्वरुप देषव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के बाद से डा. कुतुम काम के लिये कम्पनी नही जा सके। उनके अन्दर एक डर भी था कि वे उत्तरपूर्वी राज्य के हैं, उनके पास पारमिषन लेटर भी नहीं है। ऐसे में अगर वे पैदल भी काम पर जायेंगे तो पुलिस पुछ–ताछ करेगी। लेकिन घर में रहते हुये भी डाक्टर कुतुम इस बात से परेषान थे कि उनको वेतन नहीं मिलेगा तो उनके घर का खर्च कैसे चलेगा।

एकता परिषद के स्थानीय कार्यकर्ता श्री रवि बद्री जी को जब इसके बारे में पता चला तो उन्होंने कम्पनी के मैनेजर श्री वेनु जी तथा तेलंगाना के अन्य सामाजिक कार्यकर्ता श्री पालिवाल जी तथा रायथु स्वराज वैदिक से बातचीत की। इतना ही नहीं, इस समस्या के बारे में मीडिया को बताया गया तथा स्थानीय प्रषासन के साथ डा. कुतुम के पहचान–पत्र तथा परमिषन लेटर के लिये भी सम्पर्क स्थापित किया गया ताकि वे अपने कम्पनी में काम करने जा सकें। काफी प्रयास के बाद डा. कुतुम को परमिषन दिया गया और एक बार फिर डा.कुतुम अपने काम पर जाना प्रारंभ कर दिये।

ओड़िसा

स्नेहलता ओड़िसा

- **जिला कालाहांडी –** जिले के बेहरागुड़ा गांव के 13 अतिगरीब परिवारों को स्थानीय सरपंच के सहयोग से राषन का प्रबंध किया गया।
- ओड़िसा के संगठनात्मक कार्यक्षेत्र में पलायन संबंधी जानकारी भर कर पंचायतों में जमा करने का काम किया जा रहा है ताकि यथाषीध्र उन्हें वापस बुलाया जा सके और अपने ही गांव अथवा जिले में काम दिया जा सके।
- कोरोना संकटकाल में दैनिक मजदूर काम न मिलने से परेषान हो रहे हैं। ऐसे में ओड़िसा राज्य की सरकार द्वारा मनरेगा के तहत काम षुरु करने का निर्णय लिया गया है ताकि दैनिक मजदूरों को राहत दी जा सके। एकता परिषद की कार्यकर्ताओं द्वारा कालाहांडी के मनिखेड़ा ग्राम (ब्लॉक–एम रामपुर) पंचायत में काम शुरु करने के लिये आवेदन दिया गया। इस संबंध में संबंधित अधिकारियों से बातचीत की गई। परिणाम अच्छे आये और दिनांक 27 अप्रेल से इस गांव में भूमि विकास का काम प्रारंभ किया

गया है। गांव के गरीब परिवारों के लिये यह काम वरदान सिद्ध हुआ है।

कालाहांडी ओड़िसा के बेहरागुडा, सुखनभाटा,जमुनासागर और महीजोर गॉव में 50 अति गरीब परिवारों को खाद्धान सामग्री का वितरण किया गया।

उत्तर प्रदेश

मेवा सहरिया ललितपुर

जिला ललितपुर – देश में उत्तरप्रदेश के ग्रामीण अंचल से पलायन की दर सबसे अधिक रही है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी उत्तरप्रदेष के गांव–गांव से लोग पलायन पर इस उम्मीदों से गये थे कि दो–तीन महीनों में जो कमा कर लायेंगे उससे 4–6 महीने घर में खाने को हो जायेगा परन्तु इस वर्ष कोरोना संक्रमण के कारण पूरे देष में काम बन्द कर दिया गया और मजदूर दूर–दराज स्थानों पर फंस गये। काम के अभाव में मजदूर अपने घर आने के लिये परेषान हैं। ऐसी स्थिति में संगठन की कार्यकर्ता मेवा सहरिया के द्वारा मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेष को एक पत्र लिखा गया जिसमें आग्रह किया गया है कि बबीना ब्लॉक के बड़ोरा चौराहा, कोटी, पुरा बडेरा, नयाखेड़ा, रक्षा, बाजना, गेवरा, भूपनगर आदि के सैकड़ों मजदूर फलोदी शहर, राजस्थान में फंसे हैं उन्हें षीध्र वापस लाने की व्यवस्था की जाये। इसके अलावा संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा स्थानीय विधायक, सांसद और मुख्यमंत्री के नाम पत्र लिख कर पलायन पर गये मजदूरों को वापस लाने की बात बार–बार दुहराई गई।इसके अलावा, कोरोना संकट से परेषान गर्भवती महिलाओं को भी संगठन की कार्यकर्ता के द्वारा आंगनबाड़ी सुपरवाईजर से सम्पर्क करं पोषण आहार दिलवाया गया तथा टीकाकरण भी करवाया गया। इतना ही नहीं जखौरा ब्लॉक में 12 महिलाओं को मुख्यमंत्री जन–धन राषि दिलवाया गया।

आन्ध्र प्रदेश

स्रोत – कोरोना रिस्पोंस समूह

NYP के कार्यकर्ता देश के कई भागों में पहुँचा रहे राहत सामग्री

नई दिल्ली। जाने माने अनुभवी गांधीवादी और राष्ट्रीय युवा परियोजना के निदेशक डा. एस.एन. सुब्बाराव भाईजी NYP के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से नियमित रूप से ऑनलाइन वीडियो कोन्फ्रेंसिंग के माध्यम से युवाओं को लौंकडाउन अवधि में राहत कार्य के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। उनकी प्रेरणा से राष्ट्रीय युवा परियोजना, नई दिल्ली के सदस्य अलग-अलग राज्यों में जरुरतमंद गरीब परिवारों के लिये राहत कार्य संचालित कर रहे हैं। जिसमें पका हुआ भोजन, मास्क वितरण, किया जा रहा है।

NYP और एकता परिषद तेलंगाना राज्य इकाई द्वारा पेडडापुललली जिला , करीम नगर, वारंगल में 150 से अधिक प्रवासी मजदूर जो कि महाराष्ट्र और ओडिसा से है उनके लिये सुबह का नाश्ता और दोपहर का भोजन चावल सब्जी का वितरण किया गया । इसके साथ साथ सभी को सेनिटाइजर एवं मास्क भी दिये गयेा।

NYP के सदस्य देश के कई राज्यों जैसे ओडिशा, राजस्थान, मध्य प्रदेश में विभिन्न स्थानों में पक्षियों और जानवरों के लिए भी भोजन व्यवस्था का कार्य कर रहे हैं।

NYP जयपुर,राजस्थान के वरिष्ठ साथी श्री हनुमान जी लोक डाउन में बंदरों के लिये फलों का वितरण करते हुये।

1 मई , मजदूर दिवस पर.....

श्रीमित प्रीति तिवारी भोपाल

मैं मजदूर हूँ, मजबूर नहीं.....

''मजदूर'' शब्द कहते ही हमारे सामने धुप में ईंट ढ़ोते अथवा खेतों में हल चलाते हुये किसी वंचित गरीब व्यक्ति का चित्र उभरता है लेकिन मजदूर का अर्थ हमेशा गरीब और वंचित नहीं होता, यह एक ऐसा वर्ग है जो किसी भी समाज की सफलता का एक अभिन्न अंग है, फिर चाहे वह ईंट गारे में सना इन्सान हो अथवा फाईलों के बोझ तले दबा हुआ कर्मचारी। उन्हीं मजदूरों को सम्मान और बधाई देने का दिवस है– 'अन्तर्राट्रीय श्रमिक दिवस'।

'अन्तर्राट्रीय श्रमिक दिवस' विश्व भर में मनाया जाने वाला एक बड़ा उत्सव है और इसे 4 मई 1886 के दिन को याद करने के लिये मनाया जाता है। 4 मई 1886 को शिकागो में, 8 घंटे से अधिक काम न करने की मांग को लेकर, मजदूरों द्वारा किये गये प्रदर्शन पर पुलिस द्वारा गोली चलाई गई थी जिसमें चार प्रदर्शनकारी मारे गये थे और दर्जनो घायल हुये थे। इसी घटना और दिन को याद करते हुये यह दिवस मनाया जाता है। इसे दिवस को श्रमिक दिवस, मजदूर दिवस, लेबर डे, मई दिवस आदि नामों से भी जाना जाता है। आज दुनिया के लगभग 80 देशों में राष्ट्रीय अवकाश रखा जाता है। भारत में मजदूर दिवस की शुरुआत 1 मई 1923 को मद्रास (वर्तमान में चेन्नै) में किया गया, तब इसे मद्रास दिवस के नाम से जाना जाता था। वर्तमान में हमारे देश में भी इसे 'अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस' के नाम से मनाया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में हर वर्ष लगभग 6 करोड़ से भी अधिक ग्रामीण मजदूर एक राज्य से दूसरे राज्य अथवा अपने ही राज्य के अन्य जिलों में काम की तालाश में जाते हैं और इनमें से भी उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, गुजरात और महाराष्ट्र अग्रणी राज्यों में हैं जहां से सबसे अधिक पलायन होता है। अतः आज के दिन भारत के उन मजदूरों पर बात करना आवश्यक है जो इस वर्ष भी अपने-अपने गांवों और कस्बों को छोड़ कर इस उम्मीद से दूसरे राज्यों अथवा जिलों में गये थे कि बाहर जा कर मजदूरी करने से जो कमाई होगी उससे अपने और अपने परिवार के लिये कम से कम 4-5 महीने के भोजन की व्यवस्था की जा सकेगी। परन्तु मजदूरों के पलायन के साथ ही कोरोना नामक एक संकट सामने आ गया जिसे किसी ने न कभी सुना, न कभी देखा। 22 मार्च को जनता कर्फ्यू और 25 मार्च से देशव्यापी लॉकडाउन ने देश के मजदूर वर्ग को सबसे अधिक प्रभावित किया। इस दौरान हजारों मजदूर देश के विभिन्न भागों में फंस गये। पलायन पर गये मजदूरों के समक्ष कहीं राशन की समस्या खड़ी हो गई तो कही पैसे की, कहीं पहचान-पत्र की तो कहीं घर वापसी की, कहीं बीमार बच्चों के लिये दवाई की तो कही रहने के ठिकाने की, कहीं शासन-प्रशासन का

लाभ न मिलना तो कहीं घर के लिये पैदल ही निकल पड़ना आदि अनेकों समस्या से ग्रसीत मजदूर वर्ग विभिन्न माध्यमों से मदद की गुहार लगाने के लिये मजबूर हो गया।

ऐसी परिस्थिति में एकता परिषद जैसा जनसंगठन, जिसकी पहूँच प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से देश के लगभग सभी राज्यों में हैं, चुप नहीं बैठ सकता था। संगठन ने पूरी सक्रियता और ताकत के साथ लोगों को मदद करने का बीड़ा उठाया। संगठन की मदद में जागरुकता बढ़ाने से लेकर राहत सामग्री वितरण तक और शासन-प्रशासन पर दबाव बना कर सरकार के द्वारा दिये जाने वाले लाभ को पात्र परिवार तक पहूँचाने से लेकर पलायन पर गये मजदूरों को वापस घर तक लाने तक की मदद शामिल है। अपने सहयोगी साथियों और कार्यकर्ताओं की मदद से संगठन ने लगभग 25000 प्रवासी श्रमिकों की जानकारी इकट्ठा करने का काम किया है और इसी के आधार पर विभिन्न राज्य सरकारों, मीडिया के साथियों, जनप्रतिनिधियों और प्रशासन के लोगों के साथ संवाद करके प्रवासी मजदूरों की घर वापसी को सुनिश्चित करने का प्रयास जारी रखा है। कई जगहों पर इसके सकारात्मक परिणाम आने लगे हैं और प्रदेश सरकारों ने सकारात्मक पहल प्रारंभ की है। हजारों मजदूर वापस घर भी पहुँच चुके हैं और उन्हें तीन महीने की अग्रीम राशन व आर्थिक मदद जैसी योजनाओं का लाभ भी मिला है।

इस पूरी प्रकिया में प्रशासन के कई विभागों का सहयोग सराहनीय रहा है। इतना ही नहीं वापस आये मजदूरों को काम दिलवाना और किसानों की तैयार फसल को बाजार तक पहूँचाना भी एक विकराल समस्या के रुप में खड़ा है। संगठन इन दोनों मुद्दों पर भी सरकार से निरन्तर बातचीत कर रहा है। पूरा विश्वास है कि सरकार और संगठन का संयुक्त प्रयास लोगों को राहत देने में मददगार सिद्ध होगी।

एकता परिषद्, संसाधन केन्द्र, पुरानी छावनी थाने के पास, ए.बी. रोड पुरानी छावनी ग्वालियर, सम्पर्क - 9993592425
Contact Persons : Ran Singh Parmar 9993592425, Email: mgsa.india@gmail.com ,
www.mahatmagandhisevaashram.org, www.ektaparishad.org